168 P
654
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRA
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1235/1012
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 654

9
189
891.431
G 237R

बनमाला—२८

ष्ट्रीय गायन

Rashtriya Gayan

654

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
15 AUG. 1932

रामदास गौड़

एक आना।

शुभ-कामना

मुझे आशा है कि जनताकी ओरसे इस भण्डारक
उदार आश्रय मिलेगा जिससे यह अपने उद्दिष्ट काम
सन्तोषजनक रीतिसे कर सकेगा। यह कहनेकी
जरूरत ही नहीं होगी कि इस प्रयत्नमें लाभ उठाने
मंशा बिलकुल नहीं है। 'यंग इंडिया' १०-१-२६

—०—

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 654
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

शुद्धखादी-भण्डारका उद्देश्य

१—हिन्दुस्तानके हर हिस्सेसे भांतिभांतिकी मो
महीन, सादी-रङ्गीन खादी मँगाना और सुन्दर सिला
रङ्गाई और छपाई द्वारा लोगोंकी रुचिके अनुकू
बनाकर सस्ते दामोंमें बेचना।

२—जो लोग खादीका प्रचार अपने गांव या नग
करना कराना चाहें उन्हें सब तरहकी सलाह, सूच
और यथाशक्य सहायता देना।

प्रकाशक—महावीरप्रसाद पोद्दार, शुद्ध खादी-भण्ड
१३२।१, हरिसन रोड, कलकत्ता। मुद्रक—तरुलतादे
मतवाला प्रेस, नं० ६ चितपुर स्पर, कलकत्ता।

Rashtriya Gayan
in Hindi
2 copies
Govt of U.P.

ईश-विनय ।

१ अनेक नाते

राग देस—दादरा

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ॥ १
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसों ?
मो समान आरत, नहिं आरतिहर तोसों ॥ २
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो ।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितु मेरो ॥ ३
तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानिये जो भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरन-सरन पावै ॥ ४

२ दूसरो न कोऊ

राग टोड़ी—द्रुत एक ताल (चार ताल)

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोऊ।
जासों दीनता कहौं, हौं देखौं दीन सोऊ ॥ १
सुर नर मुनि असुर नाग साहिब तो घनेरे ।
पै तौलौं, जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे ॥ २
त्रिभुवन तिहुं काल बिदित बदत वेद चारी ।
आदि अन्त मध्य राम साहिबी तिहारी ॥ ३
तोहिं मांगि मांगनो न मांगनो कहायो ।
सुनि स्वभाव सील सुजस जाचन जन आयो ॥ ४
पाहन, पशु, बिटप, बिहंग अपने करि लीन्हें ।
महाराज दसरथके रंक राय कीन्हें ॥ ५
तू गरीबको निवाज, हौं गरीब तेरो ।
बारक कहिये कृपालु ! "तुलसिदास मेरो" ॥ ६

३ कौन जतन बिनती करिये ?

राग आसावरी—तीन ताल

कौन जतन बिनती करिये ?
निज आचरन बिचारि हारि हिय
मानि जानि डरिये ॥ १
जेहि साधन हरि द्रवहु जानि जन
सो हठि परिहरिये ।
जाते बिपति-जाल, निसिदिन दुख
तेहि पथ अनुसरिये ॥ २
जानत हूं मन बचन करम
परहित कीन्हें तरिये ।
सो बिपरीत देखि परसुख
बिनु कारन ही जरिये ॥ ३
स्रुति पुरान सबको मत यह—
सतसंग सुदृढ़ धरिये ।

निज अभिमान मोह इरिषा बस
तिनहिं न आदरिये ॥ ४
संतत सोइ प्रिय मोहिं सदा
जातें भव-निधि परिये ।
कहौ अब नाथ कौन बलते
संसार-सोग हरिये ॥५
अब कब निजु करुना सुभाउतें
द्रवहु तो निस्तरिये ।
तुलसिदास बिस्वास आन नहिं,
कत पचि-पचि मरिये ॥ ६

४ संत-सुभाव

राग हिंडोल—तीन ताल

कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो ?
श्री रघुनाथ कृपालु कृपाते
संत-सुभाव गहौंगो ॥ १
जथा-लाभ-संतोष सदा,
काहूसों कछु न चहौंगो ।
परहित-निरत निरंतर मन-क्रम-
बचन नेम निबहौंगो ॥ २
परुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि
तेहि पावक न दहौंगो ।
बिगत-मान, सम सीतल मन,
पर-गुन नहिं दोष कहौंगो ॥ ३
परिहरि देह-जनित चिंता,
दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो ।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि
अबिचल हरिभगति लहौंगो ॥ ४

५ अब न नसैहौं

राग खमाज—तीन ताल

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं ।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी,
जागे फिरि न डसैहौं ॥ १
पायों नाम चारु चिन्तामनि
उर करते न खसैहौं ।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी
चित-कंचनहि कसैहों ॥ २
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन
निज बस ह्वै न हँसैहों ।
मन-मधुकर पन करि तुलसी
रघुपति-पद कमल बसैहों ॥ ३

६ कासों बैर करों ?

राग बहार—ताल बिलंबित,तीन ताल

अब हौं कासों बैर करौं ?
कहत पुकारत प्रभु निज मुखतें "घट घट हौं बिहरौं"!
आपु समान सबै जग लेखौं भक्तन अधिक डरौं ।
श्री हरिदास कृपाते हरिकी नित निर्भय बिचरौं ॥

७ मोसम कौन कुटिल खल कामी

राग केदार-तीन ताला

मो सम कौन कुटिल खल कामी ?
जिन तनु दिये ताहि बिसरायो ऐसो निमकहरामी ।
भरि भरि उदर बिषयको धायों जैसे सूकर ग्रामी ।
हरिजन छोड़िकै, हरि-बिमुखनकी निसिदिन करत गुलामी ॥
पापी कौन बड़ो है मोतें सब पतितनमें नामी ?
सूर पतितको ठौर कहां है, सुनिये श्रीपति स्वामी ॥

८ निर्बलके बल राम

राग भैरवी, पंजाबी ठेका-तीन ताल

सुने री मैंने निर्बलके बल राम ।
पिछली साख भरूं संतनकी,
आड़े सँवारे काम ॥ १
जबलग गज बल अपनो बरत्यो
नेक सरो नहिं काम ।
निर्बल ह्वै बल राम पुकारयो
आये आधे नाम ॥ २
द्रुपद-सुता निर्बल भइ तादिन
गहि लाये निजधाम ।
दुःशासनकी भुजा थकित भई
बसनरूप भये श्याम ॥ ३
अपबल तपबल और बाहुबल
चौथा है बल राम ।
सूर किशोर कृपासे सब-बल-
हारेको हरिनाम ॥ ४

९ पछितैहै अवसर बीते

राग पूर्बी–तीन ताल

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु
करम बचन अरु हीते ॥ १
सहसबाहु दसबदन आदि नृप
बचे न कालबलीतें।
हम हम करि धन-धाम संवारे
अन्त चले उठि रीतें ॥ २
सुत बनितादि जानि स्वारथरत
न करु नेह सबहीते।
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर
तू न तजै अब हीते ॥ ३
अब नाथहि अनुरागु, जागु जड़,
त्यागु दुरासा जीते।
बुझै न काम-अगिनि तुलसी
कहुं बिषय-भोग बहु घीते ॥ ४

१० वैष्णव कौन है ?

राग खमाज—धुमाली

वैष्णव जन तो तेने कहिये
जे पीड़ पराई जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तोये
मन अभिमान न आणे रे ॥
सकल लोकमां सहुने बन्दे,
निन्दा न करे केनी रे ।
बाच-काछ-मन निश्चल राखे,
धन धन जननी तेनी रे ॥
समदृष्टि ने तृष्णात्यागी,
परस्त्री जेने मात रे ।
जिव्हा थकी असत्य न बोले,
परधन नव झाले हाथ रे ॥
मोह माया व्यापे नहि जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे ।

रामनामशूं ताली लागीं,

सकल तीरथ तेना मनमां रे ॥

वणलोभी ने कपट रहित छे,

काम क्रोध निवार्या रे ।

भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां

कुल एकोतेर तार्या रे ॥

११ तुमि बन्धु, तुमि नाथ !

राग अड़ाना—ताल झपताल

तुमि बन्धु तुमि नाथ, निसिदिन तुमि आमार।
तुमि सुख, तुमि शान्ति, तुमि हे अमृत पाथार॥
तुमि तो आनन्दलोक, जुड़ावो प्राण नाशो शोक।
ताप-हरन तोमार चरन असीम शरन दीनजनार॥

१२ अन्तर मम बिकसित करो

राग आसावरी-द्रुत एक ताल

अन्तर मम बिकसित करो अन्तरतर हे !
निर्मल करो, उज्वल करो, सुन्दर करो हे ! अन्तर०
जागृत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे !
मंगल करो, निरलस-निःसंशय करो हे ! अन्तर०
युक्त करो हे सबार संगे, मुक्त करो हे बन्ध।
संचार करो सकल कर्मे, शान्त तोमार छन्द। अ०
चरणपद्मे मम चित्त निष्पन्दित करो हे !
नंदित करो, नंदित करो, नंदित करो हे ! अन्तर०

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

भारत-चन्दना

१ वन्देमातरम् !

बन्दे मातरम् !
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् बरदाम् मातरम् । बन्दे०
त्रिंश कोटि कंठ-कलकल निनाद-कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खर करवाले,
के बले मा तुमि अबले ?
बहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्,
रिपुदल-वारिणीम् मातरम् ! वन्दे०

त्वंहि विद्या त्वंहि धर्म,
त्वंहि हृदि त्वंहि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमार ये प्रतिमा गड़ी मन्दिरे मन्दिरे !
त्वंहि दुर्गा दशप्रहरण धारिणीम्
कमला कमलदल-विहारिणीम्
वाणी विद्यादायिनीम् नमामि त्वाम् !
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्
सुजलाम् सुफलाम् मातरम् ! वन्दे०
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम् !
वन्दे मातरम् !

—बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

२ जगत-जननि-जननी !

अयि भुवन-मनोमोहिनी !
अयि भुवन-मनोमोहिनी !
अयि निर्मल-सूर्य्य-करोज्ज्वल-धारिणि;
जनक-जननि-जननी ! अयि०
नीलसिन्धु-जल-धौत चरणतल,
अनिल-विकम्पित श्यामल अंचल,
अम्बर-चुम्बित-भाल हिमाचल,
शुभ्र-तुषार-किरीटिनि ! अयि०
प्रथम प्रभात उदित तव गगने,
प्रथम सामरव तव तपोवने,
प्रथम प्रचारित तव वन भवने,
ज्ञानधर्म कत पुण्य-काहिनी ! अयि०
चिर कल्याणमयी तुमि धन्य,
देश विदेशे बितरिछो अन्न,
जाह्नवी-जमुना विगलित करुणा
पुण्य-पीयूष-स्तन्य-वाहिनी ! अयि०

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

३—भारत—भाग्य-विधाता

जय हे !

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता !
पञ्जाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गङ्गा,
उच्छ्वल जलधितरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा,
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य विधाता ॥
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय, जय जय जय हे !

अहरह तव आह्वान-प्रचारित
सुनि तव उदार वाणी,
हिन्दु, बौद्ध, सिख, जैन, पारसिक,
मुसलमान, ख्रिस्तानी ।
पूरब पश्चिम आसे,
तव सिंहासन पासे,
प्रेमहार हय गाथा ।
जनगण-ऐक्य विधायक-जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ॥
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !
पतन-अभ्युदय बंधुल पंथा जुग जुग धावित यात्री,
हे चिर सारथि तव रथचक्रे मुखरित पथ दिन रात्री ।
दारुण विप्लव माझे,
तव शंखध्वनि बाजे,
संकट-दःख-त्राता ।

जनगण-पथ-परिचायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ॥
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !
घोर तिमिर घन निबिड़निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे,
जाग्रत छिलतव अविचल मंगलरत नयने अनिमेषे ।
दुःस्वप्ने आतंके,
रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता ।
जनगण दुःखत्रायक जय हे,
भारत-भाग्य-बिधाता ॥
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !
रात्रि प्रभातिल उदित रविच्छबि पूर्व उदयगिरि भाले,
गाहे बिहंगम पुण्यसमीरण नवजीवनरस ढाले ।

तव करुणा-कण रागे,
निद्रित भारत जागे,
तव शरणे नत माथा।
जय जय जय हे जय राजेश्वर,
भारत भाग्य विधाता॥
जय हे, जय हे, जय हे।
जय जय जय जय हे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

४ नमो हिंदुस्तान

अतीत-गौरव-वाहिनि !

अतीत गौरव मम वाणि !

गाहो आज हिन्दुस्तान

महासभा-उन्मादिनि मम वाणि,

गाहो आज हिन्दुस्तान ।

कर विक्रम-विभव-यशः- सौरभ

पूरित सेई नामगान ।

बंग, बिहार, अजोध्या, उत्कल, मान्द्राज, माराठा,

गुर्ज्जर, पंजाब, राजपूतान ।

हिन्दू, पारसी, जैन, ईसाई, सिख, मुसलमान,

गाओ सकल कण्ठे, सकल भाषे—

नमो हिन्दुस्तान ।

(हिन्दू गायक गण) हर हर हर जय हिन्दुस्तान ।

(पारसी ” ”) दादर हुरमुज़ हिन्दुस्तान ।

(मुसलमान " ") अल्लाहो अकबर हिन्दुस्तान
(सकल) नमो हिन्दुस्तान।
भेद-रिपु-विनाशिनी मम वाणि,
गाहो आजि ऐक्यगान।
महाबल-विधायिनी मम वाणि,
गाहो आज ऐक्यगान।
मिलाओ दुःखे, सौख्ये, सख्ये,
लक्ष्ये काय-मनः-प्राण।
बंग, बिहार, अजोध्या, उत्कल, मान्द्राज, 'राठा,
गुर्ज्जर, पंजाब, राजपूतान।
हिन्दू, पारसी, जैन, ईसाई, सिख, मुसलमान,
गाओ सकल कण्ठे, सकल भाषे—
नमो हिन्दुस्तान।
(हिन्दू गायकगग,) हरि हरि हरि जय हिन्दुस्तान।
(ईसाई " ") जयति जिहोवा हिन्दुस्तान
(मुसलमान " ") अल्लाहोअकबर हिन्दुस्तान
(सकल) नमो हिन्दुस्तान।

सकल जन-उत्साहिनी मम वाणि !

गाहो आजि नूतन तान।

उठाओ कर्म-निशान, धर्म-विषाण,

आजियो से ताए प्राण।

बंग, बिहार, अजोध्या, उत्कल, मान्द्राज, माराठा,

गुर्ज्जर, पंजाब, राजपूतान

हिन्दू, पारसी, जैन, ईसाई, सिख, मुसलमान।

गाओ सकल कण्ठे, सकल भाषे—

नमो हिन्दुस्तान।

(हिन्दू जैन आदि गायक गण)

जय जय ब्रह्मन् हिन्दुस्तान।

(सिख " ") अलख निरञ्जन हिन्दुस्तान

(पारसी " ") दादर हुरमुज हिन्दुस्तान।

(मुसलमान ") अल्लाहो अकबर हिन्दुस्तान !

(सकल) नमो हिन्दुस्तान।

—*सरला देवी चौधरानी*

५ भजे भारतम्

भजे भारतं चारु-शोभाऽभिरामम् ।
शुभं शाश्वतं भारती-भव्य-धामम् ।
पदं पैतृकं मातृपीठं ललामम् ।
सदा संदधेऽहं मुदा पुण्यनामम् ॥ १

ध्रुवं धार्मिकं धीर धुर्यं धरेशम् ।
परं प्रेम-बीजं वरं वीर-वेशम् ।
सुरैः संस्तुतं सुव्रतं सद्विशेषम् ।
भजे भारती भासुरं भव्यदेशम् ॥ २

लसच्छुभ्र-हैमाचलम् मौलि भालम्
लुठत्कंठ-मंदाकिनी-मंजु-मालम् ।
बृहद्वारिधि-स्निग्ध-कल्लोल नीरै—
रभिक्षालितं विश्व-वंद्यांघ्रि नालम् ॥ ३

बहु-प्रांतर-प्रांत रम्यान्तरालम्
पुरग्राम-धामाभिरामं रसालम् ।
दिगन्तश्रितं वन्यलावण्य जालम् ।
भजेऽहं सदा भारतं श्री विशालम् ॥ ४

६ हिन्दोस्तां हमारा !

सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा !
हम बुलबुलें हैं उसकी, वह गुलसितां हमारा !
गुरबतमें१ हों अगर हम रहता है दिल वतनमें,
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा !
परबत जो सबसे ऊंचा, हमसाया२ आसमांका,
वह सन्तरी हमारा, वह पासबां३ हमारा !
गोदीमें खेलती हैं जिसकी हजारों नदियां,
गुलशन है जिनके दमसे रश्केजिनां४ हमारा ।
ऐ आबे रोदे५ गंगा वह दिन हैं याद तुझको,
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा ?
मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना,

---

१ परदेस २ पड़ोसी ३ रक्षक ४ स्वर्गको जिसकी ईर्षा हो ५ धारा

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।
यूनानो मिस्रो रूमा सब मिट गये जहांसे,
अबतक मगर है बाक़ी नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां१ हमारा।
"इक़बाल" कोई महरम२ अपना नहीं जहांमें,
मालूम क्या किसीको दर्देनिहां३ हमारा।

—सर मुहम्मद इक़बाल

---

१ कालचक्र २ भेद जाननेवाला ३ भीतरकी व्यथा।

७ मेरा वतन

चिश्तीने जिस ज़मींमें पैग़ामेहक़१ सुनाया,
नानकने जिस चमनमें वहदत का२ गीत गाया,
तातारियोंने जिसको अपना वतन बनाया,
जिसने हेजाज़ियोंसे३ दश्ते४ अरब छुड़ाया,
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है ! १
सारे जहांको जिसने इल्मो हुनर दिया था,
यूनानियोंको जिसने हैरान कर दिया था,
मिट्टीको जिसको हक़ने ज़रका५ असर दिया था,
तुर्कोंका जिसने दामन हीरोंसे भर दिया था,
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है ! २
टूटे थे जो सितारे, फ़ारसके आसमांसे,
फिर ताब देके जिसने चमकाये कहकशांसे६,
वहदतकी नय७ सुनी थी दुनियाने जिस मकांसे,

---

१ ईश्वरका सन्देश २ अद्वैतवाद ३ अरब निवासी ४ जंगल ५ सोना ६ आकाश-गंगा। ७ वंशी

मीरे अरब१को आई ठंडी हवा जहांसे,

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है। ३

बन्दे किलीम२ जिसके, परबत जहांके सीना३
नूहे नबीका ठैरा आ कर जहां सफ़ीना,४
रफ़अत५ है जिस ज़मींको बामे फ़लकका जोना,
जन्नतकी ज़िन्दगी है जिसकी फ़िज़ामें५ जीना,

मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है। ४

गौतमका जो वतन है, जापानका हरम है,
ईसाके आशिक़ोंको मिस्ले येरूशलम है,
मदफून६ जिस ज़मींमें इस्लामका हशम७ है,
हर फूल जिस चमनका फ़िरदौस८ है, इरम है
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है ।५

इकवाल

---

१ हज़रत महम्मद २ हज़रत मूसा ३ तूर पर्वत जिसपर मूसाको ईश्वरीय ज्योतिके दर्शन होना माना जाता है। ४ नाव ५ ऊंचाई ६ गड़ा हुआ ७ गौरव ८ स्वर्ग

८ जन्मभूमि

जहां जन्म देता हमें है विधाता,
उसी ठौरमें चित्त है मोद पाता।
जहां हैं हमारे पिता बन्धु माता,
उसी भूमिसे है हमें सत्य नाता॥ १

जहांकी मिली वायु है जीवदानी,
जहांका भिदा देहमें अन्न पानी।
भरी जीभमें है जहांकी सुबानी,
वही जन्मकी भूमि है भूमि रानी॥ २

कहीं जा बसे चाहता किन्तु जी है—
रहे सामने जन्मकी जो मही है।
नहीं मूर्त्ति प्यारी कभी भूलती है,
छटा लोचनोंमें सदा झूलती है॥ ३

जिसे जन्मकी भूमि भाती नहीं है,
जिसे देशकी याद आती नहीं है,

कृतघ्नी महा कौन ऐसा मिलेगा,
उसे देख जी क्या किसीका खिलेगा ॥ ४

जिसे जन्मकी भूमिका मान होगा,
उन्हें भाइयोंका सदा ध्यान होगा।

दशा भाइयोंकी जिन्होंने न जानी,
कहेगा उसे कौन देशाभिमानी ॥ ५

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 654
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

भारत क्रंदन

१ खद्दरधारी हिन्दुस्तान

मेरे प्यारे हिन्दुस्तान ! खद्दर-धारे हिन्दस्तान !
तुझपर वारे हिन्दुस्तान ! तनमनधनसे हम हैं तेरे
तेरे गुन-गौरवकी कहानी,
तेरे धन-वैभवकी कहानी,
हो गयी दुनियासे भी पुरानी,
इतिहासोंने बहुत बखानी,
वेद भी गाते गुन बहुतेरे ॥ तुझपर वारे० १
बरस हजारो लुटते बीते,
जन धन अन्नसे हो गये रीते,
छल बल भेदसे तुम गये जीते,
सरबस गया, रहे बस जीते,

तब भी छोड़ते नहीं लुटेरे ॥ तुझपर वारे० २

अबतक रनमें डटा हुआ है,
अंग अंग जर्ज्जर कटा हुआ है,
सूख भूखसे लटा हुआ है,
कवच जीर्ण हो फटा हुआ है।

सब हथियार गये छिनकेरे ॥ तुझपर वारे० ३

ब्रह्मबाण सत्याग्रहका ले,
ढाल अहिंसा सन्मुख घाले,
खद्दरका यह कवच चढ़ा ले,
मन्त्र एकता समतावाले,

जपता बढ़ इस संगरमें रे ॥ तुझपर वारे ०४

२ तेरा

लक़ब था एक दिन हिन्दोस्तां जन्नतनिशां१ तेरा !
ज़मीं थी दामने गुल, आइना था आसमां तेरा !
गुबार-आलूद२ मतला३ आजकल तेरा है क्यों आख़िर
यह मज़लूमोंकी४ आहें हैं कि छाया है धुवां तेरा !
हैं सहराये५ जहांमें भेड़ बकरी की तरह जो हम
मआज़ अल्लाह६ ! लाया रंग ये अमनोअमां७ तेरा।
कफ़नके वास्ते भी होगये मुहताज ग़ैरोंके,
हुआ बे-दस्तोपा८ इस तरहसे हर इक जवां तेरा।
असीरीमें९ है एक मुद्दतसे देखें कब रिहाई हो,
क़फ़ससे१० छुटके उठता कब है मुर्गेनातवां११ तेरा।

---

१ स्वर्गतुल्य २ अंधकारमय ३ सूर्योदयकास्थान भाग्याकाश ४ पीड़ित ५ जंगल ६ त्राहि भगवन् ७ शान्ति ८ हाथ पैरका ९ वन्दीकी दशा १० पिंजड़ा ११ कमजोर चिड़िया।

३ बस हम समझते हैं

हैं दम भरते हम उनका,
वह हमें बेदम समझते हैं।

समझते होंगे वह दिलमें
कि हम कुछ कम समझते हैं।

हमारे दर्द दुखका हाल
कोई ग़ैर क्या समझे.

गुज़रती हमपै क्या क्या है--
इसे बस हम समझते हैं।

शरारतसे नहीं बाज आते,
हमको छेड़े जाते हैं,

अगर कुछ कहते हैं हम तो
उसे ऊधम समझते हैं।

हमें हाजत नहीं है अब
किसीकी रहनुमाई की,
हम अपने दिलके आईनेको
जामे जम१ समझते हैं।
'त्रिशूल' अब तो उठा है
दिलसे उनका एतबार ऐसा,
जो वह शीरीनी देते हैं
मिला हम समर२ समझते हैं।

—'त्रिशूल'

१-राजा जमशेदका प्याला जिसमें विश्व दीखता था।

२-जहर

४ तेरे लिए ये सर हो

ऐ मेरी जान भारत, तेरे लिए ये सर हो !
तेरे लिए ही ज़र हो, तेरे लिये जिगर हो ।
हिचकें न तेरी सेवासे मेरी जान भारत,
गर्दनपै मेरी रक्खी शमशेर या तबर हो ।
ग़म जानके लिये भी मुझको कभी न होगा,
भारत तेरे लिये ही आती ये काम गर हो ।
क़िस्मतका मेरी अख़्तर[१] चमके फिर आसमांपर,
सेवामें तेरी माता गर ज़िन्दगी बसर हो ।
भारतमें ही सदा मैं पैदा हूं और मरूं भी—
ईश्वर न कुछ हो मनमें यह आरज़ू मगर हो ।
जीवन सुफल तभी बस समझेगा 'साधु' अपना,
सेवामें तेरी माता सर मेरा गर नज़र हो ।

---

१ सितारा

५ जब अपना राज देखेंगे

उरूजे कामयाबी१पर कभी हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सैयादके२ हाथोंसे अपना आशियां३ होगा।
चखा देंगे मज़ा बर्बादिये गुलशनका४ गुलचींको५,
बहार आ जायगी जिस दम कि अपना बांग़बां होगा।
जुदा मत हो मेरे पहलूसे ऐ दर्दे वतन हरगिज़,
न जाने बाद मुर्दन६ मैं कहां और तू कहां होगा।
शहीदोंके मज़ारोंपर जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतनपै मरनेवालोंका यही बाक़ी निशां होगा।
कभी वह दिन भी आवेंगे जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनीही ज़मीं होगी और अपना आसमां होगा

—"बिस्मिल"

---

१ सफलताका शिखर २ व्याधा ३ घोंसला ४ बगीचा ५ फूल तोड़नेवाला ६ मृत्यु

६ फिरसे जगाना पड़ेगा

तुम्हें शंख मोहन बजाना पड़ेगा।
ये भारतको फिरसे जगाना पड़ेगा।
पड़े वीर आलसमें सोते हुए जो,
उन्हें अब तो आकर जगाना पड़ेगा।
हुआ जा रहा है जो भारत यों ग़ारत,
इसे आके तुमको बचाना पड़ेगा।
छिड़ा युद्ध भारी अहिंसात्मक जो,
तुम्हें सारथी बन जिताना पड़ेगा।
हुए जो गिरफ्तार गांधी हमारे,
तो घर-घरमें गांधी बनाना पड़ेगा।
जो मालो ख़ज़ाना बह ढो ले गये हैं,
उसे फिरसे वापस दिलाना पड़ेगा।
हुए हैं शहीदे वतन जितने अबतक,
उन्हें फिरसे जगमें बुलाना पड़ेगा।

७ कब हे भगवान ?

प्रलय कब होगा हे भगवान ?
पवन प्रचण्ड चलेगा किस दिन
होगी क्रान्ति महान ?
उथल-पुथलकारी जब जगमें
आवेगा तूफ़ान ? प्रलय०
अमित दुखित हैं भक्त तिहारे,
प्रति पल छीजन प्रान,
अकथ व्यथाओंका जगदीश्वर
होगा कब अवसान ? प्रलय ०
मौज उड़ाते हैं पूंजीपति
कर कर शोणित पान,
दीन किसानों, मज़दूरोंका
होइ रहा बलिदान। प्रलय ०

मौन रहे हम अबलगि
तेरे करत रहे गुणगान।
ऊब गये हैं सहते सहते
अत्याचार महान। प्रलय०
वेगि संहारो सृष्टि मुरारे !
विनय हमारी मान।
बिना प्रलयके हम दलितोंका
होगा नहिं उत्थान ? प्रलय०

—"देवेश"

८ क्या होगा ?

जो वक्ते शिकवा खुदासे महशरमें१
रोके हम अश्कबार होंगे।
तो सुनके भारतकी दुर्दशाओंको
रंज परवरदिगार होंगे ॥
करोगे फ़रियाद कैसे रोकर
खुदाके हमसर बरोज़े महशर ?
ये चन्द क़तरे भी आंसुओंके
न मिलने वाले उधार होंगे ॥
महात्माओंको कैद रखनेसे
आन्दोलन न दब सकेगा ।
अभी तो तैंतीस करोड़ गांधी
स्वदेशमें आशकार २ होंगे ॥
हज़ारों मोतीके होंगे जौहर
व लाखों होंगे जमा जवाहर
औ मरनेवाले वतनपै अपने
करोड़ों क्या बेशुमार होंगे ॥

---

१ प्रलय २ प्रकट

तुम्हारे तीरे सितमको मेहमां
बनाके दिलमें जो रख रहें हैं।
ये मेरी आहोंमें होके शामिल
तुम्हारे सीनेके पार होंगे ॥
ग़ज़बमें आकर न बदलो तेवर
चलाके ख़ंजर भी आज़मा लो।
क़सम खुदाकी ये सच ही मानो
ज़रा न हम बेक़रार होंगे ॥
हमारे भारतके बच्चे बच्चे
बढ़ाके उत्साह कह रहे हैं—
कि हिन्दमाताके कदमोंमें सर
चढ़ाके हम जांनिसार[१] होंगे ॥
जो छोटे बच्चोंके नर्म दिलमें भी
गोलियोंको चुभा रहे हो।
तुम्हारे सीनेमें चुभनेवाले
हज़ारों बिच्छूके आर होंगे ॥
—'शायक़'

१बलिदान

९ पुलिसवाले

भाईंप' सितम ढाते भारतके पुलिस वाले ।
हैं रहम नहीं खाते भारतके पुलिसवाले ।
भारतके सपूतोंका है कौल अहिंसाका,
क्यों खूंसे हैं नहलाते भारतके पुलिस वाले ?
आये न विलायतसे, हैं लख़्तेजिगर अपने,
नहिं खौफ खुदा खाते भारतके पुलिसवाले ।
जो हम हैं वहीं वह हैं, जो वह हैं वही हम हैं,
क्यों भूल गये नाते भारतके पुलिसवाले ?
जल अन्नसे भारतके वह "मस्त" हुए पैदा ।
क्यों भूल इसे जाते भारतके पुलिसवाले ?

१० सैयाद !

उजाड़ कर मेरा गुल्शनसे आशियां१ सैयाद२ !
रहेगा तूभी न दुनियामें शादमां३ सैयाद ।
सम्भल, कि गिरती हैं अब तुझपै बिजलियां सैयाद,
गई है आहे रसा४ सूए५ आसमां सैयाद ।
ज़बाने हालसे कुछ तो हमें भी कहने दे,
गला न घोंट, जरा खोल उंगलियां सैयाद !
वफ़ा-शेआर ६ रहे, तेरे ज़ांनिसार रहे,
इस आसपर कि तू है इसका क़द्रदां सैयाद ।
करमके बदले जो होता है अब सितम हमपर,
यही था क़ौल तेरा, थी येही ज़बां सैयाद ?
सिला ७ वफ़ाका तेरे दरसे मिल गया हमको ,
कि आज लुटता है हस्तीका कारवां८ सैयाद ।

---

१ घोसला २ व्याधा ३ प्रसन्न ४ पहुंचनेवाली ५ ओर, तरफ ६ प्रीतिका निर्वाह करनेवाला ७ बदला ८ जीवन रूपीकाफ़िला

क़ुसूर किसका है, खूद सोच ले जरा दिलमें,
जमाना किसपै उठाता हैं उंगलियां सैयाद ?
कुछ अपने वक्तको भी यादगार रहने दे,
मिटे हुएका मिटाता है क्यों निशां सैयाद ?
यह याद रख कि ख़ुदाको भी मुंह दिखाना है,
सितम तो जो तेरा जी चाहे कर यहां सैयाद।
ख़ुदा करे न फले फूले आरजू तेरी,
मिटाये गुलशने-हिर्सोहवा१ ख़िज़ां२ सैयाद।
वह दिन गये कि हमें जिन्दगीकी हसरत थी,
फ़ुजूल क़त्लकी देता है धमकियां सैयाद।
गजबकी हैं तेरी जादू-बयानियां "क़ैसर,"
कि अपनी भूल गया लन्तरानियां३ सैयाद।
—"कैसर" देहलवी

१ लोभमोहका बगीचा २ पतझड़ † डींग

११ स्वराज्य देखेंगे ।

कभी वह दिन भी आयेगा
कि हम स्वराज देखेंगे ।
दयारे हिन्दमें फिर
हिन्दियोंका राज देखेंगे ।
छुटेगी कौम अपनी
ग़ैर मुल्कोंकी हुकूमतसे,
वतनको अपने ग़ैरोंका
न हम मुहताज देखेंगे ।
गड़ेगा हिन्दमें झण्डा
मोहब्बत और मिल्लतका,
दयारे हिन्दमें तब
हिन्दियोंका राज देखेंगे ।
न हिन्दी क़ौमपर क़ब्ज़ा
रहेगा ग़ैर हाकिमका,

न भारतवर्षसे लेते
कभी ख़िराज देखोंगे।
हमेशा हर घड़ी बच्चे,
जवां और पीरके दिलमें,
वतनके इश्क़की उठती हुई
आवाज़ देखेंगे।
मसायब[1] जितने हैं सब
दूर होंगे हिन्दवालोंके,
संवरते हिन्दके बिगड़े
हुए भी काज देखेंगे।
न आने पायेंगी कसरतसे
मुल्के ग़ैरकी चीज़ें,
न जाता हिन्दसे
हिन्दोस्तांका नाज देखेंगे।

---

१ विपत्तियां

ग़रीबोंको भी आयेगी
मयस्सर पेट भर रोटी,
यतीमोंको[१] न दानेदानेका
मोहताज देखेंगे।
विजयके हार होंगे
नेहरू औ गांधीकी गरदनपर,
मुक़द्दस[२] मादरे भारतके
सरपर ताज देखेंगे॥
मनायेंगे ज़मीने हिन्दपर
हम जशने[३] आज़ादी।
"फ़लक" परसे हमें
खुश खुश तिलक महराज देखेंगे।
—लालचन्द 'फ़लक'

१ अनाथ २ पवित्र ३ उत्सव

१२ अछूतकी फरियाद ।

तुम्हारे जुल्मकी तुमसे ही हम फरियाद करते हैं।
मोहब्बतका नया पहलू ये एक ईजाद करते हैं।
हमें बर्बाद करनेके निकाले सैकड़ों पहलू,
मगर हम हैं कि हर जुल्मोसितमपर स्वाद१ करते हैं।
तड़प जाता है दिल पहलूमें आंखें खून रोती हैं,
मज़ालिमकोर२ तुम्हारे जब कभी हम याद करते हैं।
जो हम ग़लतीसे छू जायें तो हट हट करने लगते हैं,
मगर कुत्तेको लेकर गोदमें दिल शाद करते हैं।
न अपनेमें मिलाते हैं, न करते हैं जुदा बिलकुल,
न हमको क़ैद करते हैं, न आप आज़ाद करते हैं।
न जीने देते हैं हमको, न हस्ती ही मिटाते हैं,
हमारे हालपर ये रहम बस जल्लाद करते हैं।

---

१ मान लेना २ अत्याचार

न कैसे हौसला ग़ैरोंको ठुकरानेका हमको हो,
हमारे अपने भाई हमपै जब बेदाद करते हैं ?
हमें लेनेपैं राज़ी हैं बड़ी ख़्वाहिशसे ईसाई,
खुशामद सैकड़ों नित पादरी मन्नाद करते हैं।
शुमार अपनेमें कर लेते हैं हमको वाय१ ख़ुदग़र्ज़ी !
मुक़ाबिल ग़ैरके पेश अपनी जब तादाद करते हैं।
"मुसाफिर" क्या तेरे तर्ज़े बयांमें२ ऐसा जादू है,
तेरे अशआरपर क्यों स्वाद सब उस्ताद करते हैं ?

१ हा, यरे २ कहनेका ढंग

२६ बेताबी

ये बेताबीका आलम हो, न दिल ठहरे, न जां ठहरे।
रुके फ़रियाद क्योंकर, किस तरह आहोफुग़ां[१] ठहरे।
उड़ा सकती है यह सौसौ निशाने एकही जदमें,
मुक़ाबिल तोपके कैसे कोई सादी कमां ठहरे?
अजब क्या है ग़ुलामोंसे जो वह बदतर समझते हैं,
हम उनके बन्दे ठहरे, वह हमारे हुक्मरां ठहरे।
उधर हुक्कामकी कूवतपर एक मस्तीका आलम था।
न होते किस तरह कुरबां, इधर हम नौजवां ठहरे?
तपाई जा रही है आजकल तक़दीर मुल्कोंकी,
कहांतक देखिये इस आंचमें हिन्दोस्तां ठहरे।
खबर अपने वतनकी कैसे हो शेखो बरहमनको,
वह बुद्धू पांडे ठहरे और वह भुल्लू मियां ठहरे?
नहीं दस्तेसितम थमता है उनका एक दमको भी,
जो यह ठहरेतो दिल ठहरे जो दिल ठहरेतो जांठहरे
'त्रिशूल' अपना ठिकाना क्या है इसवहशतके आलममें
इधर घूमे उधर घूमे, यहां ठहरे वहां ठहरे।

—'त्रिशूल'

---

१ रोना चिल्लाना

वीर-गुण-गान

१ गांधी

दूर आंखोंसे हो, यह कब है गवारा गांधी !
बैठते उठते करें तेरा नज़ारा गांधी !
दिलसे, जीसे यही अब कहते हैं दौलत वाले—
है गरीबोंकी ग़रीबीका सहारा गांधी ।
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बनकर,
उनकी आंखोंमें खटकता है हमारा गान्धी ।
आफ़तें आईं तेरे सरपै, बलायें आयीं,
है वतनके लिये सब तुझको गवारा गांधी ।

दिलसे जीसे वह हमेशाके लिये दास हुआ,
कर लिया जिसने कभी तेरा नजारा गांधी।
जिसको देखो यही कहता है बड़े दर्दके साथ—
हो गया आज नजरबन्द है प्यारा गांधी।
सारी दुनियामें जमानेमें पड़े एक हलचल,
तू जो कर दे किसी जानिबको इशारा गांधी।
कैदखानेके अधेरेमें पड़ा है 'बिस्मिल',
देश भारतका चमकता हुआ तारा गांधी।

'बिस्मिल'

२ मनुष्यजातिका अभिमान

गांधी तू आज हिन्दका एक शान बन गया !
सारी मनुष्यजातिका अभिमान बन गया ।
तू सत्य, अहिंसा, दया, निःस्वार्थ, त्यागसे,
बस आज मर्त्यलोकमें भगवान बन गया ।
तेरा प्रभाव सादगी हस्तीको देख कर,
दुश्मन भी बेज़बान हो हैरान बन गया ।
तेरी नसीहतोंमें वह जादूका है असर,
जिसको लगी हवा तेरी इन्सान बन गया ।
तू दोस्त है हर क़ौमका हर-दिल-अज़ीज़[१] है,
सारा जहान तेरा क़दरदान बन गया ।
गो हिन्द आज उठ न सके बाइसे तक़दीर,
फिर भी स्वराज लेनेका सामान बन गया ।
धिक्कार है माधव हमें तैंतीस कोटिको,
तुझसा फ़क़ीर जेलका मेहमान बन गया ।

—माधव शुक्ल

१सबका प्यारा

३ सर कर गया मैदान यतीन

क्यों न हों अहले वतन आज परेशान यतीन !
गुलशने हिन्दको तू कर चला वीरान यतीन।
ज़िन्दगी सर्फ हुई कौमकी बेहबूदीपर,
तूने बेख़ौफ लुटा मुल्कपै दी जान यतीन।
कब्र ज़मानतपै रिहाई तुझे मंजूर हुई ?
था उदूका१ न गवारा तुझे एहसान यतीन।
राहे इन्साफ़पै लानेके लिये हाकिमको,
"मैं न खाऊंगा" ग़िज़ा तूने लिया ठान यतीन।
जिसको शादाब किया खूनसे तूने अपने,
क्यों न लायेगा समर फिर वह गुलिस्तान यतीन।
तू जहाँ भरके शहीदोंमें रहा है दोयम,
खाक क्यों जलके न हो अपने रकीबान यतीन।

१ दुश्मन

तू सिखा खूब गया सारे तरीक़े हमको,
अब डरेंगे न क़फ़ससे कभी मुर्ग़ान१ यतीन।
हम भी मानिन्द तेरी क़ौमकी आज़ादीपर,
क्योंन अब तर्क करें ऐशके सामान यतीन।
जंगे क़ौमीमें फतह पायेगा अब हिन्द जरूर,
साफ़ यह तेरी अजल कर गई एलान२ यतीन।
ईद आती है, न घबराये कोई जब कि ख़तम
कर गया तेरः सितम्बरको है रमजान यतीन।
अब कदम जम गये, पीछे न हटेंगे "बे-अक्ल",
खौफ़ही क्या है कि सर कर गया मैदान यतीन।

—बे-अक्ल

---

१ पक्षी २ घोषणा

४ यतीन्द्रकी लाशपर

भाई नहीं है लाशा यह बेकफ़न तुम्हारा।
है पूजनेके लायक पावन बदन तुम्हारा।
दिन आजका यह होगा त्योहार एक क़ौमी,
बैकुण्ठको हुआ है इस दिन गमन तुम्हारा।
जाया लहू तुम्हारा जानेका यह नहीं है,
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा।
खुद मरके जिस्मे क़ौमीमें तुमने जान डाली,
है जातिका यह जीवन गोया मरन तुम्हारा।
सब भक्तियोंसे बढ़कर है मातृभूमि-भक्ति,
छूटा है बादे मुद्दत आवा-गमन तुम्हारा।
इतिहासमें रहेंगी कुर्बानियां तुम्हारी;
तुमपर रहेगा नाजां प्यारा वतन हमारा।

५ तकदीर जवाहिरकी

बूढ़े भी जरा देखें तदबीर ज़वाहिरकी।
चमकी है जवानीमें तक़दीर जवाहिरकी।
बेचैन हुए क्या क्या बेदर्द भी सुन सुन कर,
किस दर्दमें डूबी है तक़रीर१ जवाहिरकी।
दाराकी भी दाराइं कुर्बान न हो क्यों कर ?
इस वक्त सिकन्दर है तकबीर२ जवाहिरकी।
चभ चुभके कलेज़ेमें तड़पाने लगी दिलको,
नश्तरसे नहीं कुछ कम तफ़सीर३ जवाहिरकी।
कुहराम है दुनियामें, हलचल है जमानेमें,
सौ रंग दिखायेगी तदबीर जवाहिरकी।
रक्खे हुए है सरपर वह ताज सदारतका४,
हो इससे जियादा क्या तौक़ीर५ जवाहिरकी।
इनआम है ऐ 'बिस्मिल' यह मुल्ककी खिदमतका,
हर दिलमें उतर आयी तसवीर जवाहिरकी।

—*'बिस्मिल'*

१ वक्तृता २ बड़प्पन ३ व्याख्या ४ सभापतित्व ५ सम्मान

६ वीर जवाहरने

भारतका डंका आलममें
बजवाया वीर जवाहरने।
स्वाधीन बनो स्वाधींन बनो—
समझाया वीर जवाहरनं॥
वह लाल जो मोतीलालका है,
है लाल दुलारा भारतका।
सोते भारतको हठ करके,
जगवाया वीर जवाहरने॥
अंगरेजांकी मृगतृष्णामें
भूले थे भारतवासी सब।
पूरी आजादीका मन्तर
सिखलाया वीर जवाहरने॥
घोंटी है राजनीति उसने,
छानी है खाक विदेशोंकी।
समता स्वतन्त्रताका मारग,
दिखलाया वीर जवाहरने॥

पूंजीपति जमींदार करते हैं
जुल्म मजूर किसानोंपर।
बन साथी दीनोंका, धीरज
धरवाया वीर जवाहरने॥
एक गहरी आग धधकती है
आजादीकी उसके दिलमें।
जिससे युवकोंका मुर्दा दिल
चमकाया वीर जवाहरने॥
आदर्श चरितसे वह अपने
युवकोंका है सम्राट् बना।
आजादीका ऊंचा झण्डा,
फहराया वीर जवाहरने॥
बिजली है बाणीमें उसको,
जादू है आंखोंमें उसकी।
देखा जिसको, एक पल भरमें
अपनाया वीर जवाहरने॥

सैनिकोंकी ललकार

१ शूर कौन है?

राग मालकौस-झपताल

शूर संग्रामको देख भागै नहीं,
देख भागै सोई सूर नाहीं।
काम औ क्रोध मद लोभसे जूझना
मँडा घमसान तहं खेत माहीं॥
सील औ सौच सन्तोष साही भये,
नाम समसेर तहं खूब बाजै।
कहैं कब्बीर सोइ जूझिहै सूरमा,
कायरां भीड़ तहं तुरत भाजै॥
—कबीर

२ एकला चला रे

एक्‌ला चलो रे !

जदि तोर डाक शुने केओ ना आसे

तबे एक्‌ला चलो रे ।

एक्‌ला चलो, एक्‌ला चलो,

एक्‌ला चलो रे ॥ जदि०

जदि केओ कथा ना कय

ओरे ओरे ओ अभागा,

केओ कथा ना कय, जदि सबाई थाके मुख फिराये,

सबाई किरे भय तबे पराण खुले, ।

ओ तूई मुख कुटे तोर मनेर कथा

एक्‌ला चलो रे ॥ जदि०

जदि सबाई फिरे जाय

ओरे ओरे ओ अभागा,
सबाई फिरे जाय जदि गहन पथे जाबार काले,
केओ फिरे ना। चाय तबे पथेर कांटा।
ओ तुई रकतमाखा चरणतले
एकला चलोरे ॥ जदि०

जदि आलो ना धरे
ओरे ओरे ओ अभागा.
आलो ना धरे जदि झड बादले आंधार राते,
दुवार देय धरे तव बासान ले,
आपन बुकेर पांजर जालिये निये
ऐकला चलो रे ॥ जदि०

३ सर-फ़रोशीकी तमन्ना

सर-फ़रोशीकी१ तमन्ना अब हमारे दिलमें है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिलमें है।
रहबरे २ राहे मुहब्बत, रह न जाना राहमें,
लज्जते सहरानवर्दी ३ दूरिये मंजिलमें है।
वक्त आने दे, बता देंगें तुझे ऐ आसमां,
हम अभीसे क्या बतायें, क्या हमारे दिलसें हैं।
आज फिर मक़तलमें क़ातिल कह रहा है बारबार,
क्या तमन्नाए-शहादत ४ भी किसीके दिलमें है ?
ऐ शहीदे मुल्कोमिल्लत५, हम तेरे ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मतका चरचा गैरकी महफ़िलमें है।
अब न अगले वलवले६ हैं और न अरमानोंकी७ भीड़
सिर्फ मिट जानेकी 'हसरत' अब दिले बिस्मिलमें८ है।

—हसरत मोहानी

---

१ सिरका बलिदान २ मार्गदर्शक ३ वन-विचरण ४ बलिदान होनेकी अभिलाषा ५ देश और धर्म्म ६ जोश ७ मनोरथ ८ घावोंसे मरता हुआ

४ कौमने करवट ली है

मादरे हिंदकी तसवीर हो सीनेपै बनो,
बेड़ियां पैरोंमें हों और गलेमें कफ़नी।
आजसे तेरी वफ़ाका यही जौहर होगा,
फर्श कांटोंका हमें फूलोंका बिस्तर होगा।
फूल हो जायेगा छातीपै जो पत्थर होगा,
कैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा।
सन्तरी देखकर उस जोशको शरमाएंगे,
गीत ज़ञ्जीरकी झनकारपै हम गाएंगे।
दिल तड़पता है कि स्वराज्यका पैग़ाम मिले,
कल मिले, आज मिले, सुबह मिले, शाम मिले।
हुक्म हाकिमका है—फ़रियादे जबानी रुक जाय,
पर यह मुमकिन नहीं यह जोशे जवानी रुकजाय।
हों खबरदार जिन्होंने यह अज़ीयत१ दी है।
कुछ तमाशा नहीं यह, कौमने करवट ली है।

१ कष्ट, पीड़ा

५ डरना कैसा ?

देशके वास्ते अग़ियारसे डरना कैसा ?
सरकी परवा नहीं, सरकारसे डरना कैसा ?
खिदमते कौममें आज़ारसे२ डरना कैसा ?
मर्द होकर रसनोदारसे† डरना कैसा ?
दिलमें जबतीर चुभोना हो तो क्या ख़ाफे खलिश४
सर कटाना है तो तलवारसे डरना कैसा ?
ऐ मुहिब्बाने वतन, दाखिले ज़िन्दां५ होकर,
तुमको जंजीरकी झनकारसे डरना कैसा ?
सरफ़रोशीकी तमन्ना है तो खिँचते क्यों हो ?
उनकी चलती हुई तलवारसे डरना कैसा ?

---

१ गैर दुश्मन २ दुःख कष्ट † रसन-रस्सी, जंजीर कैद; दार-फांसी ४ कोई नोकदार चीज़ चुभ जानेकी पीड़ा ५ जेलखाना।

६ असर देख लेना

शहीदोंके खूँका असर देख लेना,
मिटा देगा ज़ालिमका घर देख लेना।
किसीके इशारेके हम मुन्तजिर हैं,
बहा देंगे खूँका नहर देख लेना।
झुका देंगे गरदनको हम जेरे खंजर,
खुशीसे कटादेंगे सर देख लेना।
जो खुदग़र्ज़ गोली चलायेंगे हमपर,
तो क़दमोंमें उनका ही सर देख लेना।
जो नख़ल१ हमने सींचा है ख़ूने जिगरसे,
वह होगा कभी बारवर२ देख लेना।
किनारे लगेगी भँवरसे यह किश्ती,
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना
बलायें ये जायँगी खुद सरनगूं३ हो,
नहीं होगा इनका गुजर देख लेना।
खुजन्दी हुआ हिन्द आजाद अपना,
छपेगी यह एक दिन ख़बर देख लेना।

—ख़ुजन्दी

---

१ पौधा २ फलदार ३ लज्जासे सिर झुकाये

७ मर्दानोंका कौल

निकल पड़ो अब बनकर सैनिक,
भंग करो फ़र्मानोंका ।
बिन स्वराज्यके नहीं हटेंगे—
कौल रहे मर्दानोंका ॥

अन्धी होकर पुलिस चलावे
डंडे, कुछ पर्वाह नहीं ।
घरका माल लूट ले जावे,
निकले मुँहसे आह नहीं ।

जेल-यातना हो निर्दय,
'गन' करें गोलियोंकी बौछार ।
ईश्वरका सुमिरन कर वीरो,
सहते जाओ अत्याचार ।

धनी, देशरिपु, दास, नपुंसक
—लखें दृश्य बलिदानोंका ।

बिना स्वराज्यके नहीं हटें गे
कौल रहे मर्दानोंका ॥ १
भगवन् भला करें अरबिनका
बने यशस्वी ब्रिटिश निशान।
होय निहत्थोंपर मार्शल्ला
शहरों गांवोंके दरम्यान।
नर नारी बच्चोंको, गोरे
अत्याचारी खूब हनें।
भारतके कोने कोनेमें
जलियांवाला बाग बनें।
चिन्ता नहीं बहे लहराता
चहुंदिश खून जवानोंका।
बिन स्वराज्यके नहीं हटेंगे
कौल रहे मर्दानोंका ॥ २

८ महिलाओं का संकल्प

गोलोंकी बौछार पड़े,
हो तोप मशीनोंकी भरमार।
करे क्रूर नौकरशाही
जी भरकर हमपर अत्याचार॥
घोर निराशा ढके शून्यको,
घनीभूत हो निशान्धकार।
विपत्ति-विद्युत कड़क कड़क कर
करती हो भयका संचार॥
विघ्न भयङ्कर दुर्गम गिरि बन
खड़े हुए हों बांध कतार।
चुनी गई हो पथमें चाहे
तीखे कांटोंकी दीवार॥
किन्तु न भारतीय महिलाएं
पीछे पैर हटायेंगी।
निश्चय अपने साहससे
अरिदलको धूल चटायेंगी॥

९ चक्की चलाऊंगी

जो कुछ पड़ेगी मुझपै मुसीबत उठाऊंगी।
खिदमत करूँगी मुल्ककी और जेल जाऊंगी।
घर भरको अपने खादीके कपड़े पिन्हाऊंगी,
और इन विदेशी लत्तोंको लूका लगाऊंगी।
चरखा चलाके छीनूंगी उनकी मशीनगन,
आदाए १ मुल्को क़ौमको नीचा दिखाऊँगी।
अपनी स्वदेश-बहिनोंको ले लेके साथमें,
भट्ठीपै हर कलालके धरना बिठाऊँगी।
जाकर किसी भी जेलमें कूटूंगी रामबांस,
और कैदियोंके साथमें चक्की चलाऊँगी।

---

१ वैरीगण

१० विद्यार्थियोंसे

चलो भाइयो, उठो ! आज
माताने तुम्हें बुलाया है।
महात्मा गांधीके द्वारा
यह सन्देश पठाया है—
उठाकर रखदो पुस्तक वीर,
गुलामीकी तोड़ो जंजीर।
न हो जबतक कि हिन्द स्वाधीन,
न लो विश्राम, न हो श्रमहीन।
हो जावो बलिदान देशपर—
यही मन्त्र बतलाया है॥ चलो० १
बड़ोंने बोरा लाज-जहाज,
तुम्हींपर निर्भर है यह काज।
पिन्हा दो भारतके सिर ताज,
चकित हो देखे सकल समाज।
आज काज भारत-स्वराज्यका
हाथ तुम्हारे आया है॥ चलो० २

११ ज़रा तासीर होने दो

मुनक्क़श१ अपने दिलपर हिन्दकी तसवीर होने दो।
क़दमसे उसके अपनासीना पुर-तनवार२ होने दो।
कभी उलझन न डालो क़ौमके कामोंमें तुम भाई,
तुम्हारे दर्दोग़मकी होती है तदबीर, होने दो।
बढ़ाये रक्खो हिम्मत, बुज़दिलीको मत फटकने दो;
न इसको अपने पावोंकी कभी ज़ंजीर होने दो।
चलनसे, इल्मसे, ग़ैरतसे, हिम्मतसे, शुजाअत३से;
न मुल्को क़ौमकी हर्गिज़ कहीं तहक़ीर४ होने दो।
अगर आये हो दुनियामें, उठाओ लुत्फ़े आज़ादी;
किसीके हाथमें अपनी न तुम तदबीर होने दो।
बहुत लिक्खे गये अफ़साने५इश्क़ो उन्सो उलफ़तके
हिकायत हुब्बे-क़ौमी६की भी अब तहरीर होने दो।
करो ख़िदमत वतनकी शौक़से, दिलसे, मुहब्बतसे

---

१ चित्रित २ सुप्रकाशित, तेजोमय ३बहादुरी ४ अपमान
५ कहानियां ६ राष्ट्रप्रेम

न मुल्की काममें कोई कभी तक़सीर[1] होने दो।
बहुत वादे टलें हैं अहदोपैमां[2]का भरोसा क्या;
तलब अपने करो हक तुम न अब ताख़ीर होने दो
मज़ो लो दर्दसे रह रहके मुल्को कौमके ग़मसे ;
जिगरके पार तो अपने ज़रा यह तीर होने दो।
तुम्हारी आहो † ज़ारी यह कभी जाया न जायेगी
खिंच आयेगी ये आजादी जरा तासीर होने दो

—"त्रिशूल"

१ कमीदोष २ वचन और प्रतिज्ञा † देर

१२ तासीरे वन्दे मातरम्

कौमके खादिमकी है जागीर वन्दे मातरम् ।
है वतनके वास्ते अकसीर वन्दे मातरम् ।
जालिमोंको है उधर बन्दूक़पर अपनी ग़रूर,
है इधर पर बेकसोंका तीर वन्दे मातरम् ।
कत्ल कर हमको न ऐ क़ातिल, हमारे खूनसे
तेग़पर हो जायगा तहरीर वन्दे मातरम् ।
किस तरह भूलूं इसे मैं, जब कि किसमतमें मेरी
लिख चुका है कातिबे तक़दीर१ वन्दे मातरम् ?
फ़िक्र क्या जब्र क़त्लपै जल्लादने बांधी कमर,
रोक देगी दूरसे शमशीर वन्दे मातरम् ।
सरजमीं हिल जायगी इंगलैण्डकी दो रोजमें,
गर दिखायेगा कभी तासीर वन्दे मातरम् ।
सन्तरी भी मुज़तरिब१ थे जबकि हर झनकारमें,
बोलती थी जेलमें जंजीर वन्दे मातरम् ।

---

१ भाग्य लेखक, विधि २ परेशान

१३ हिला देंगे

ज़मीं तो एक तरफ़ आसमां हिला देंगे।
करेंगे आह तो बस आग ही लगा देंगे।
गलेमें पहिनके कफ़नी जो घरसे निकले हैं,
पड़ेंगी आफ़तें सरपर उन्हें उठा लेंगे।
रहेंगे लेके ही स्वराज्य हक़ हमारा है,
बलासे जान भी इसके लिये लड़ा देंगे।
हमारे हिन्दके सरताज प्यारे गांधीने,
जो कुछ कहा है उसे करके अब दिखा देंगे।
नहीं जमानेकी परवा अगर बदल जावे,
यह नाव हिन्दकी हमपार अब लगा देंगे।
बयान यारका जाते हैं सुननेको हम अब
अलख जगायेंगे, घर घर यही सदा देंगे।
हराम चैन है "कृष्ण" अपने वास्ते, जबतक—
न गांव गांवके लोगोंको हम जगा देंगे॥

१४ हम हैं पहरेदार, सावधान।

बहिष्कारी जुलूसका गाना

(कोरस) हम हैं पहरेदार, सोनेवालो होशियार !
सावधान, सावधान !

बरस सैकड़ोंसे तुम सोये,
जान माल दोनों ही खोये,
होशमें आकर कभी न रोये।
सावधान, सावधान। १

(कोरस) हम हैं पहरेदार........

अन्न वस्त्र और माल घनेरे,
बार बार ले गये लुटेरे,
प्यारे अंगडाई मत लेरे।
सावधान, सावधान। २

(कोरस) हम हैं पहरेदार........

बगली सेंध लगी घरफोरी,
चोरोंने सम्पत्ति बटोरी,

बहुत ले गये बच रही थोड़ी ।
सावधान, सावधान । ३

(कोरस) हम हैं पहरेदार.......

सोना-चांदी हाथी-घोड़ा,
बासन बसन अन्न नहिं छोड़ा,
न जा सका जो उसको फोडा ।
सावधान, सावधान । ४

(कोरस) हम हैं पहरेदार.......

इस हदतक तुम लुट गये प्यारे ,
निज कपड़ा तनपर न तुम्हारे ,
भूखे ललाते बाल बिचारे !
सावधान, सावधान । ५

(कोरस) हम हैं पहरेदार.......

जागो, उठो, हुआ है सवेरा,
हम भी उठे लगाने फेरा,

अभी तलक था नींदने घेरा,
सावधान, सावधान । ६

(कोरस) हम हैं पहरेदार.......

पर-पटसे तन बंधा हुआ है,
करकट भोजन सँधा हुआ है,
बिषसे क्या नहिं सना हुआ है ?
सावधान, सावधान । ७

(कोरस) हम हैं पहरेदार.......

जागो, उठो मैदानमें आओ,
वसन विदेशी आग लगाओ,
खद्दरही पहनो पहनाओ ।
सावधान, सावधान । ८

(कोरस) हम हैं पहरेदार.......

चरखा कातो, मेल बढ़ाओ,
छूत अछूतका भेद मिटाओ

नशा बुरा है दूर कराओ।
सावधान, सावधान । ९

(कोरस) हम हैं पहरेदार....

गोरक्षा कर गोरस पाओ,
सरो करो निज स्वास्थ्य बढ़ाओ ,
मोटा पहिनो, मोटा खाओ,
सावधान, सावधान । १०

(कोरस) हम हैं पहरेदार....

सत्य अहिंसा धर्म्म अचारो,
सुख स्वराज्यके सब हक़दारो,
"रघुपति" राघव राम उचारो ।
सावधान, सावधान । ११

(कोरस) हम हैं पहरेदार, सोनेवालो होशियार !
सावधान, सावधान ।

१५ उधर और इधर

उधर बन्दूक, एयरोप्लेन१, गुरखे और बम होंगे।
इधर शौके-शहादतमें२ सरे तसलीम खम होंगे।
यह माना उनकी जानिबसे बहुत जौरोसितम३ होंगे,
हमारा तो अहिंसाधर्म होगा और हम होंगे।
उधर दावा है छोड़ेंगे न हम हिन्दोस्तां हरगिज,
इधर है जोश अब तो हुक्मराने हिन्द हम होंगे।
लड़ेंगे जंग आजादीकी यों हिन्दोस्तां वाले,
कलेजा होगा अर्जुनका, तो अंगदके क़दम होंगे।
जवानाने वतनसे भर दें सारे जेलखाने वह,
जब अपनी सल्तनत होगी तभी आजाद हम होंगे
जिन्हें है देशसे उलफ़त उन्हें किस बातका ग़म है?
खुशीसे वह सहेंगे उनपै जो जौरोसितम होंगे।
यह कहकर नौजवानाने वतन जेलोंमें जाते हैं—
यह सारे जेलखाने हिंदके दैरोहरम४ होंगे।
हवाए-हुब्बे-क़ौमी५ बह रही है देशमें "बेढब",
यक़ीं हैं अब बयाबाने६ वतन बागे इरम७ होंगे॥

—बेढब (बनारसी)

---

१ हवाई जहाज़ २ बलिदानकी अभिलाषा ३ अत्याचार
४ मन्दिर और मसजिद ५ देशप्रेमकी हवा ६ जंगल
७ नन्दन कानन

महात्मा गांधी लिखते हैं—

शुद्ध-सस्ता साहित्य

"मैं इस सुन्दर, सस्ते और उपयोगी हिन्दी साहित्यके प्रकाशनके उद्योगका स्वागत करता हूं। ये पुस्तकें बहुत सस्ती और बड़े अच्छे आकार प्रकारकी हैं। इनमें 'नवजीवन', 'यंग इण्डिया' तथा दूसरे पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानोंके लेखों और पुस्तकोंका सार है। अधिकतर साहित्य खादी-संबंधी हैं। मैं कुल खादी-भण्डारोंसे इन्हें बिक्रीके लिये रखने की सिफारिश करता हूं। पूर्ण विवरण 'शुद्ध खादी भण्डार, १३२।१ हरिसनरोड कलकत्तासे प्राप्त किया जा सकता है।"

'हिन्दी-नवजीवन' ५-९-२९

नवजीवन-माला

१ एकमात्र गृह-उद्योग चर्खा)।।।
२ खादीके बारेमें)।
३ हम कैसे लुटे ?)।।
४ एक ही उपाय)।।
५ खादी-गीत –)
६ खद्दर ही क्यों ? =)
७ सँभलें कैसे ? =)
८ नवयुवकोंसे दो बातें –)
९ अंग्रेजी राज्यके सौ साल =)
१० प्रजाद्रोही राजा वेणु ।।
११ अज्ञान और दारिद्र्य –)
१२ पैसेकी माया –)
१३ मिलकी माया =)
१४ स्वदेशीका नाश –)
१५ खादी-प्रदर्शक ।)
१६ किसानोंकी बरबादी –)
१७ खतरेकी घड़ी अथवा धनवानोंको चेतावनी =)
१८ नमक कर)।।।
१९ सत्याग्रह-युद्ध –)
२० अनासक्तियोग— गांधीजीका गीतानुवाद =)
२१ जिन्दाबनो (ज़ब्त)
२२ युद्ध-यात्रामें। प्रवचन जब्त
२३ बहनोंसे-गांधीजीकृत ।।
२४ स्वदेशी और बहिष्कार ")।।।
२५ काली करतूतें " (जब्त)
२६ समर-यात्रा =)
२७ राजस्व और हमारी दरिद्रता ।)

छप रही हैं—

२८ सर्वोदय-गांधीजीकृत"
२९ अमृतवाणी
३०—गांवोंमें जाकर क्या करना होगा

प्रकाशक—शुद्ध खादी-भण्डार
१३२।१ हरिसन रोड, कलकत्ता